बुन्देली कवितायें

धुनकी रूई पै पौआ

माधव शुक्ल मनोज

Scanned with OKEN Scanner

कवि / माधव शुक्ल मनोज

प्रथम संस्करण 1992

मूल्य - 25.00

प्रकाशक - साहित्य सागर संस्था सागर

मुद्रक - सागर आफसेट प्रिंटर्स, सागर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

कितनौ गज इंदियारो /6
गेहूँ से पिसे /7
बदमासी /9
पुटरिया में /11
बुन्देली लटके /13
छाती में उठत हिलोर /15
बुन्देली अटके /17
रात की कुठरिया में /19
तनाव /21
कुलबुलात सपनों /22
मारबे घन्टा बजन लगौ /24
भीतर सें जहरीले ,,
बिछौना डार कें ऊ सो गई,,
मूड़ खुजावे जूआं जूं /25
हो गओ फांक फूंक कें फांकू,,
सोफा गद्दा के गांव में ,,
नगीना होकें कहूँ जड़े /26
अपनो प्यारो लोकतंत्र हे ,,
अच्छे हें हट्टे-कट्टे ,,
नईयां कछु खराबी /27
सब कह रये इनखों बांके ,,
बड़े साब के नौकर ,,
खावे खों नईयां गल्ला /28
आग लगा कें तापो ,,
श्री-श्री जे-सिर्री ,,
करइया-झरिया लगन लगे /29
पियें दूध के गडुआ ,,
टोरो चाहत हें--ठड्डा ,,
तन रओ हाथों कौ मुक्का /30
लएँ कठौती गंगा ,,
पड़ा-बैल सो जानों ,,

खूबई लेत उसांसें भाई /31
बिना मौत मरे रे ,,
तू भी खुश, मैं भी खुश ,,
सब देखें-हक्के-बक्के /32
जे आ गअे हैं मंगू ,,
ऊ के गुट में शामिल ,,
चल कें सेंध लगायें /33
मन खों कहूँ बिठार दओ ,,
भूल गअे वे ताव ,,
तुम मेरे हो स्वामी /34
करौ नें अब मनमानी ,,
हरीरो झुरमुट बारो गांव ,,
ऐब और गुन लेखो तो /35
कुआं खोद पानी भरें ,,
गेंती लएँ खुदैया ,,
डीगें मारी / मूंछें उमठी /36
ढक्कन से उघर गअे /38
बीड़ी सुलगांय /39
दिया से उजर गअे /42
कमाल पिया /44
खांय करौंदा / बीने बेर /46
मन मोरो पहाड़ /48
देखत रय गई पनडुब्बी /50
ही कहाँ हिरा गअे /51
लमछी रय गईं मुरारें /52
भां रअ मठा सो /53
चुरत चाऊर से बफयाने /54
बे दिन आहें कबै /55
हम आकाशी नीले /56
ओ गलियारे गांव के /57
जीवन जो सूरज सो /59
अंगना में करियौ उजेलो भैया/60
मोरी बिटिया/61

सन १९३० सागर में जन्म। साहित्य रत्न! बुन्देली एवं हिन्दी के सुपरिचित कवि-लेखक। लोक कलाओं में गहरी अभिरुचि। राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त शिक्षक। बुन्देल खंड के लोक नृत्य राई पर शोधात्मक कार्य लेखन। प्रकाशित मोनोग्राफ म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद के मनोनीत पूर्व सदस्य। सन ४२ के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय (भूमिगत) भाग लिया। "विन्यास" मासिक पत्रिका एवं "सोनार बंगला देश" कविता संकलन का संपादन।

आकाशवाणी १९५३ से सम्बद्ध स्थाई अनुबंधित कवि। छतरपुर आकाशवाणी के मनोनीत कार्यक्रम सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य। प्रगतिशील लेखक संघ सागर इकाई के पूर्व सदस्य। महत्वपूर्ण बुन्देली कला साहित्य संस्थाओं से सम्बद्ध। राष्ट्रीय एकता यात्रा दल सागर के संयोजक।

निवास स्थाई पता :– परकोटा सागर (म. प्र.)

प्रकाशित कृतियां

(१) सिकता कण – कविता संग्रह
(२) भोर के साथी – ,,
(३) माटी के बोल – ,,
(४) एक नदी कंठी सी – ,,
(५) नीला बिरछा – ,,
(६) बेला नटनी – बुन्देली संगीत रूपक
(७) राजा हरदौल बुन्देला – नाटक (बुन्देली आधुनिक नाट्य साहित्य में प्रकाशित)
(८) एक अध्यापक की डायरी – मध्य प्रदेश संदेश पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशित

मुद्रक– मुकेश प्रिन्टिंग प्रेस, सागर

Scanned with OKEN Scanner